यह तो स्पष्ट हो गया कि उस्ताद अमीर खां मुसलमान होते हुए भी वल्लभ सम्प्रदाय की रचनाओं से प्रभावित थे। लेकिन, यह तो उनकी बात हुई। आप स्वयं हिन्दू धर्माचार्य होकर भी खां साहब की गायन शैली की ओर कब और कैसे आकृष्ट हुए ?

संगीत के संस्कार तो मुझे घर में भी मिले और मंदिर में भी। मेरे पिता पं. गिरधरलाल जी महाराज और पितामह गोस्वामी कृष्णराय जी महाराज भी अच्छे गायक थे। मंदिर में भी 24 घंटों में 20 घंटे संगीत चलता था। प्रभु के हर कार्य में संगीत होता है। उन्हें सुलाने के लिये भी संगीत होता है, जगाने के लिये भी संगीत होता है और भोग लगाने के लिये भी संगीत होता है। इस मंदिर में संगीत के इसी महत्व को देखकर इंदौर आने वाले संगीतकार हमारे मंदिरों में पहले आते थे और राजदरबार में बाद में जाते थे। जहां तक मुझे याद है मैंने सन् 1951 में करीब 5 वर्ष की उम्र में सर्वप्रथम खां साहब का गाना सुना जिसने मेरे बाल मन पर अपना अधिकार जमा लिया। हमारे यहां वेद शिक्षा भी दी जाती है। अत: मैंने वेद का भी अध्ययन किया है। खां साहब के गायन की जिस विशेषता ने मुझे सर्वप्रथम अपनी ओर आकृष्ट किया वह उच्चारण की समानता थी।

वेद पाठ के समय हमें जिस ढंग से उच्चारण सिखाया जाता था खां साहब के गायन में आकर, ईकार, ऊकार आदि की वही विधि मुझे महसूस हुई। चूंकि खां साहब बल्लभ संप्रदाय की जिन रचनाओं को गाते थे उन्हें मैं दिन-रात अपने घर और मंदिर में सुना करता था। अत: उनकी गायकी मुझे अनजानी और अपरिचित नहीं, अपनी ही लगी। इसलिये भी मैं उस ओर सहज ही आकृष्ट हो गया। सामवेद में स्वर लगाने की जो विधि है, खां साहब उसका भी जाने-अनजाने पालन करते थे।

गोकुलोत्सव महाराज के साथ लेखक पं. विजय शंकर मिश्र

आपने उस्ताद अमीर खां से सीखा नहीं है, लेकिन आपके गायन में उनका भरपूर प्रभाव दिखता है। यह कैसे संभव हो पाया ?

मुझे उस्ताद अमीर खां का गायन अत्यधिक पसंद था क्योंकि वह आभिजात्य गायकी थी। उसमें किसी प्रकार का कोई फूहड़पन नहीं था। सभ्य एवं चिंतनशील गायकी थी उनकी। उनके गायन ने एक नया ट्रेंड, नया फैशन स्थापित किया जो उनकी मृत्यु के इतने वर्षों बाद भी चलन में है, फैशन में है। भावपूर्ण फिल्मी गीतों की तरह उनकी गायकी साफ-सुथरी थी। जैसे अड़ाना की यह रचना तब से अब तक लोगों को प्रभावित करती आ रही है-'झनक-झनक पायल बाजे। पायलिया की रुनक-झुनक पर। छम छम मनवा नाचे। झनक-झनक पायल बाजे। नील गगन भी सुनकर झूमें। मधुर-मधुर झनकार। सोई धरती जाग उठी है। गूंज उठा संसार। राग रंग बिस्तारे। झनक-झनक पायल बाजे।' यह संगीत चूंकि हमारी प्राचीन परंपरा पर केन्द्रित है इसलिये यह शाश्वत है, जो हर युग में लोगों को प्रभावित करेगा। यह कभी भी बासी या पुरातन नहीं होगा क्योंकि यह सनातन है।

मैं इसे दूसरी तरह से पूछता हूं। आपके गायन पर खां साहब के गायन का जो प्रभाव है वह उनकी गायकी से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण आपकी गायकी पर अनायास ही आ गया या आपने सप्रयास उनकी गायन विशेषताओं को अपने गायन में उतारा है।

इस विषय पर अब तक लोग अपनी ही राय देते रहे हैं, इसलिये मैं मूक दर्शक बना उनकी बात सुनता रहा हूं। चूंकि आप अत्यन्त सारगर्भित प्रश्न पूछ रहे हैं और मुझे अपनी बात कहने का अवसर भी दे रहे हैं इसलिये आज मैं अपनी बात कह रहा हूं। इसमें कोई दो राय नहीं कि मुझे उस्ताद अमीर खां का गायन खूब पसंद था और मैंने उसे खूब सुना भी है। लेकिन मेरे गायन के जिन गुणों की ओर संकेत करते हुए आप उसे अमीर खां का गुण मानते हैं उससे मुझे स्पष्ट इनकार है। वस्तुत: ये सभी गुण सनातन शास्त्रीय संगीत की परम्परा के हैं। चूंकि खां साहब भी इस धारा, इस परपंरा से जुड़े थे अत: लोगों ने इसे उनकी ही विशेषता मान लिया। मैं भी चूंकि उसी परम्परा का अनुयायी हूं, इसलिये लोगों को दोनों गायन शैलियों में एकरूपता नजर आती है और मुझे उनका गायन हर बार अपनेपन का बोध कराता है। लेकिन मैं उनकी नकल नहीं करता हूं।

कैसा लगता है आपको जब आपका नाम बार-बार उस्ताद अमीर खां के नाम के साथ जोड़ा जाता